Qurani Suraton Ke Fazaail (Hindi)

(हफ़्तावार रिसाला : 192)
(Weekly Booklet : 192)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब
"मदनी पन्जसूरह" की एक क़िस्त

क़ुरआनी सूरतों के फ़ज़ाइल

(सफ़हात : 20)

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**कुरआनी सूरतों के फ़ज़ाइल**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

कुरआनी सूरतों के फ़ज़ाइल

दुआए अ़त्तार : **या अल्लाह पाक !** जो कोई 19 सफ़हात का रिसाला "कुरआनी सूरतों के फ़ज़ाइल" पढ़ या सुन ले। उसे क़ियामत में कुरआने करीम की शफ़ाअ़त नसीब फ़रमा और उसे बे हिसाब बख़्श दे।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते अबुल मुज़फ़्फ़र मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ख़य्याम समर क़न्दी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं एक रोज़ रास्ता भूल गया, अचानक एक साहिब नज़र आए और उन्हों ने कहा : "मेरे साथ आओ।" मैं उन के साथ हो लिया। मुझे गुमान हुवा कि येह हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं। मेरे इस्तिफ़्सार (या'नी पूछने) पर उन्हों ने अपना नाम ख़िज़्र बताया, उन के साथ एक और बुज़ुर्ग भी थे, मैं ने उन का नाम दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : येह इल्यास (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) हैं। मैं ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक आप पर रह़मत फ़रमाए, क्या आप दोनों ह़ज़रात ने ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की है ? उन्हों ने फ़रमाया : हां। मैं ने अ़र्ज़ की : नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना हुवा इर्शादे पाक बताइये ताकि मैं आप से रिवायत कर सकूं। उन्हों ने फ़रमाया कि हम ने रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े उस का दिल निफ़ाक़ से इसी त़रह़ पाक किया जाता है जिस त़रह़ पानी से

कपड़ा पाक किया जाता है। नीज़ जो शख़्स "صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد" पढ़ता है तो वोह अपने ऊपर रह़मत के 70 दरवाज़े खोल लेता है।

(القول البدیع، ص277، جذب القلوب، ص235)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

वाह क्या बात है आ़शिक़े कुरआन की

ह़ज़रते साबित बुनानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه रोज़ाना एक बार **कुरआने** पाक का **ख़त्म** फ़रमाते थे। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **हमेशा दिन को रोज़ा** रखते और सारी रात इ़बादत फ़रमाते, जिस मस्जिद से गुज़रते उस में दो रक्अ़त (तह़िय्यतुल मस्जिद) ज़रूर पढ़ते। तह़दीसे ने'मत के तौ़र पर फ़रमाते हैं : मैं ने जामेअ़ मस्जिद के हर सुतून के पास **कुरआने पाक** का ख़त्म और बारगाहे इलाही में गिर्या किया है। नमाज़ और **तिलावते कुरआन** के साथ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ख़ुसूसी मह़ब्बत थी, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पर ऐसा करम हुवा कि रश्क आता है चुनान्चे वफ़ात के बा'द दौराने तदफ़ीन **अचानक एक ईंट सरक कर अन्दर चली गई, लोग ईंट** (Brick) **उठाने के लिये जब झुके तो येह देख कर ह़ैरान रह गए कि आप** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **क़ब्र में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ रहे हैं !** आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के घर वालों से जब मा'लूम किया गया तो शहज़ादी साह़िबा ने बताया कि अब्बू जान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه रोज़ाना दुआ़ किया करते थे : "**या अल्लाह !** अगर तू किसी को वफ़ात के बा'द क़ब्र में नमाज़ पढ़ने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाए तो मुझे भी मुशर्रफ़ फ़रमाना।" मन्क़ूल है : जब भी लोग आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार (Blessed tomb) के क़रीब से गुज़रते तो क़ब्रे अन्वर से **तिलावते कुरआन** की आवाज़ आ रही होती।

(حلیۃ الاولیاء، 2/362-366 ملتقطا)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

दहन मैला नहीं होता बदन मैला नहीं होता ख़ुदा के औलिया का तो कफ़न मैला नहीं होता

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

एक ह़र्फ़ की दस नेकियां

कुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद **अल्लाहु** रब्बुल अनाम का मुबारक कलाम है, इस का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना सुनाना सब सवाब का काम है। कुरआने पाक का एक **ह़र्फ़** पढ़ने पर **10 नेकियों** का सवाब मिलता है, चुनान्चे **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी मक्की मदनी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो शख़्स किताबुल्लाह का एक ह़र्फ़ पढ़ेगा, उस को एक नेकी मिलेगी जो दस नेकियों के बराबर होगी। मैं येह नहीं कहता कि الٓمّٓ एक ह़र्फ़ है, बल्कि **अलिफ़** एक ह़र्फ़, **लाम** एक ह़र्फ़ और **मीम** एक ह़र्फ़ है।" (ترمذی،4/417،حدیث:2919)

तिलावत की तौफ़ीक़ दे दे इलाही गुनाहों की हो दूर दिल से सियाही

सूरतुल ह़श्र की आख़िरी आयात पढ़ने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स सुब्ह़ के वक़्त तीन बार اَعُوْذُ بِاللّٰہِ السَّمِیْعِ الْعَلِیْمِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم कहे और **सूरए ह़श्र** की आख़िरी तीन आयात पढ़े तो **अल्लाह** पाक उस के लिये सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते मुक़र्रर कर देता है जो शाम तक उस के लिये **दुआए रह़मत** करते हैं और अगर उस दिन मरे तो **शहीद** (Martyr) होगा और शाम को पढ़े तो सुब्ह़ तक येही फ़ज़ीलत है। (ترمذی،4/423،حدیث:2931)

सूरतुल ह़श्र की आख़िरी तीन आयात

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ﴿۲۲﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿۲۳﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ یُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۲۴﴾ ع

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

"क़स्म" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से सूरतुल बक़रह की आख़िरी आयात पढ़ने के 3 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ **ह़ज़रते** नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक ने ज़मीन व आस्मान को पैदा करने से दो हज़ार साल पहले एक किताब लिखी फिर उस में से **सूरए बक़रह की आख़िरी दो आयतें** नाज़िल फ़रमाईं। जिस घर में तीन रातें इन **दो आयतों** को पढ़ा जाएगा शैत़ान उस घर के क़रीब न आएगा ।

(ترمذی،4/404،حدیث:2891)

﴾2﴿ **ह़ज़रते** अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** पाक ने मुझे अपने अ़र्श के नीचे के ख़ज़ाने में से ऐसी दो आयतें अ़त़ा फ़रमाईं जिन के ज़रीए सूरए बक़रह का इख़्तिताम फ़रमाया, इन्हें सीखो और अपनी औ़रतों और बच्चों को सिखाओ बेशक येह नमाज़ और क़ुरआन और दुआ़ हैं ।

(مستدرک،2/268،حدیث:2110)

﴾3﴿ **ह़ज़रते** अबू मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स **सूरए बक़रह** की **आख़िरी दो**

आयतें रात में पढ़ेगा वोह उसे किफ़ायत करेंगी। (بخاری،3/405،حدیث:5009)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सूरए बक़रह की दो आयतें किफ़ायत करने से मुराद येह है कि येह **दो आयतें** उस के उस रात के क़ियाम (रात की इबादत) के क़ाइम मक़ाम हो जाएंगी या उस रात उसे शैतान से महफ़ूज़ रखेंगी। एक क़ौल येह भी है कि उस रात में नाज़िल होने वाली आफ़ात से बचाएंगी। (فتح الباری،10/48) (सूरए बक़रह की आख़िरी दो आयत येह है :)

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓىٕكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَیْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا ٗ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَیْكَ الْمَصِیْرُ ﴿۲۸۵﴾ لَا یُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَاؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ عَلَیْهَا مَا اكْتَسَبَتْؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِیْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَاۚ رَبَّنَا وَ لَا تَحْمِلْ عَلَیْنَاۤ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِنَاۚ رَبَّنَا وَ لَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖۚ وَ اعْفُ عَنَّا ۟ وَ اغْفِرْ لَنَا ۟ وَ ارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۲۸۶﴾ ع

(پ3،البقرۃ:285،286)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : रसूल ईमान लाया उस पर जो इस के रब के पास से इस पर उतरा और ईमान वाले सब ने माना **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्तों और उस की किताबों और उस के रसूलों को येह कहते हुए कि हम उस के किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क़ नहीं करते और अ़र्ज़ की कि हम ने सुना और माना तेरी मुआफ़ी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही त़रफ़ फिरना है **अल्लाह** किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की त़ाक़त भर उस का फ़ाएदा है जो अच्छा कमाया और इस का नुक़्सान है जो बुराई कमाई ऐ रब हमारे हमें न पकड़ अगर हम भूलें या चूकें ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तूने हम से अगलों पर रखा था ऐ रब हमारे और

हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार (ताक़त) न हो और हमें मुआफ़ फ़रमा दे और बख़्श दे और हम पर महर (रहम) कर तू हमारा मौला है तो काफ़िरों पर हमें मदद दे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

"रहमत" के चार हुरूफ़ की निस्बत से सूरए फ़ातिहा के 4 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि सूरए फ़ातिहा **हर मरज़ की दवा** है इस सूरत को एक नाम "शाफ़िया" और एक नाम "सूरतुशशिफ़ा" है इस लिये कि येह हर मरज़ के लिये शिफ़ा है।

(سنن الدارمی، 2/538، حدیث:3370۔ حاشیۃ الصاوی، 1/13)

﴾2﴿ 100 मर्तबा सूरए फ़ातिहा पढ़ कर जो **दुआ** मांगी जाए उस को **अल्लाह** पाक क़बूल फ़रमाता है। (जन्नती ज़ेवर, स. 587)

﴾3﴿ **बुज़ुर्गों** ने फ़रमाया है कि फ़ज्र की सुन्नतों और फ़र्ज़ के दरमियान में 41 बार सूरए फ़ातिहा पढ़ कर मरीज़ पर दम करने से **आराम** हो जाता है और आंख का दर्द बहुत जल्द अच्छा हो जाता है और अगर इतना पढ़ कर अपना थूक आंखों में लगा दिया जाए तो बहुत **मुफ़ीद** है।

(जन्नती ज़ेवर, स. 587)

﴾4﴿ **सात** दिनों तक रोज़ाना ग्यारह हज़ार मर्तबा सिर्फ़ इतना पढ़िये ﴿اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝﴾ अव्वल आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ भी पढ़िये **बीमारियों** और **बलाओं** को दूर करने के लिये बहुत ही मुजर्रब अ़मल है। (जन्नती ज़ेवर, स. 588)

"ह़मम" के चार हुरूफ़ की निस्बत से सूरए कह्फ़ के 4 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ **ह़ज़रते** बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स **सूरए कह्फ़** की तिलावत कर रहा था, उन के घर में एक जानवर बंधा हुवा था अचानक वोह जानवर बिदकने लगा। उस शख़्स ने देखा कि एक बादल ने उस को ढांपा हुवा है उस शख़्स ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस वाक़िए का ज़िक्र किया, तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ फ़ुलां ! तिलावत किया करो, कि येह सकीना है जो तिलावते क़ुरआन करते वक़्त नाज़िल होता है। (مسلم، ص311، حدیث:1857)

﴾2﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अनस जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो सूरए कह्फ़ की अव्वल और आख़िर से तिलावत करेगा उस के सर ता पा **नूर ही नूर होगा**, और जो इस की मुकम्मल तिलावत करेगा, उस के लिये आस्मान और ज़मीन के दरमियान **नूर** होगा।

(مسند امام احمد، 5/311، حدیث:15626)

﴾3﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो जुमुआ़ के दिन सूरए कह्फ़ पढ़े उस के लिये दो जुमुओं के दरमियान एक **नूर** रोशन कर दिया जाता है।" (سنن کبری للبیہقی، 3/353، حدیث:5996) एक रिवायत में है : "जो शबे जुमुआ़ को पढ़े उस के और बैतुल अ़तीक़ (या'नी का'बतुल्लाह शरीफ़) के दरमियान एक **नूर** रोशन कर दिया जाता है।"

(سنن دارمی، 2/546، حدیث:3407)

﴾4﴿ **हज़रते** अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो सूरए कह्फ़ की **पहली दस आयतें** याद करेगा दज्जाल से **महफ़ूज़** रहेगा और एक रिवायत में है, जो सूरए कह्फ़ की **आख़िरी दस आयतें** याद करेगा दज्जाल से **महफ़ूज़** रहेगा। (مسلم، ص315، حدیث:1883، 1884)

सूरए यासीन शरीफ़ के 14 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ **हज़रते** मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सूरए यासीन **कुरआन का दिल** है जो इसे **अल्लाह** पाक की रिज़ा और आख़िरत की बेहतरी के लिये पढ़ेगा उस की **मग़्फ़िरत** कर दी जाएगी। (مسند امام احمد، 7/286، حدیث:20322 ملتقطاً)

﴾2﴿ ख़ादिमे नबी हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक हर चीज़ का एक **दिल** है और कुरआन का **दिल** सूरए यासीन है और जो एक मर्तबा सूरए यासीन पढ़ेगा उस के लिये दस मर्तबा कुरआन पढ़ने का **सवाब** लिखा जाएगा। (ترمذی، 4/406، حدیث:2896)

﴾3﴿ **हज़रते** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरी **ख़्वाहिश** है कि सूरए यासीन मेरी उम्मत के हर इन्सान के दिल में हो। (تفسیر در منثور، 7/38)

﴾4﴿ **हज़रते** अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स हमेशा हर रात यासीन की तिलावत करता रहा फिर मर गया तो वोह **शहीद** मरेगा। (تفسیر در منثور، 7/38)

﴾5﴿ **हज़रते** अ़ता बिन अबू रबाह ताबेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स दिन की

इब्तिदा में सूरए यासीन की तिलावत करेगा, उस की तमाम **ह़ाजात** पूरी कर दी जाएंगी। (تفسیر در منثور، 7/38)

﴾6﴿ **ह़ज़रते** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जो शख़्स ब वक़्ते सुब्ह़ सूरए यासीन की तिलावत करे उस दिन की **आसानी** उसे शाम तक अ़त़ा की गई, और जिस शख़्स ने रात की इब्तिदा में इस की तिलावत की उसे सुब्ह़ तक उस रात की **आसानी** दी गई। (تفسیر در منثور، 7/38)

﴾7﴿ **ह़ज़रते** अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस मरने वाले के पास सूरए यासीन तिलावत की जाती है, **अल्लाह** पाक उस पर (उस की रूह़ क़ब्ज़ करने में) **नरमी** फ़रमाता है। (تفسیر در منثور، 7/38)

﴾8﴿ **ह़ज़रते** अबू क़लाबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, वोह फ़रमाते हैं : जिस ने सूरए यासीन की तिलावत की उस की **मग़्फ़िरत** हो जाएगी, और जिस ने खाने के वक़्त उस के कम होने की ह़ालत में तिलावत की तो वोह उसे **किफ़ायत** करेगा, और जिस ने किसी मरने वाले के पास इस की तिलावत की **अल्लाह** पाक (उस पर) मौत के वक़्त नरमी फ़रमाएगा, और जिस ने किसी औ़रत के पास उस के बच्चे की विलादत की तंगी पर सूरए यासीन की तिलावत की उस पर **आसानी** होगी, और जिस ने इस की तिलावत की गोया कि उस ने **ग्यारह मर्तबा** क़ुरआने पाक की तिलावत की, और हर चीज़ के लिये दिल है, और क़ुरआन का दिल **सूरए यासीन** है। (تفسیر در منثور، 7/38)

﴾9﴿ **ह़ज़रते** अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन अ़ली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं : जो शख़्स अपने दिल में **सख़्ती** पाए तो वोह एक पियाले में ज़ाफ़रान से "یٰسٓ وَالْقُرْاٰنِ الْحَکِیْمِ" लिखे फिर उसे पी जाए। (اِنْ شَآءَاللّٰہ उस का दिल नर्म होगा) (تفسیر در منثور، 7/39)

﴾10﴿ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने हर जुमुआ़ को अपने वालिदैन, दोनों या एक की क़ब्र की **ज़ियारत** की और उन के पास यासीन की तिलावत की तो **अल्लाह** पाक हर ह़र्फ़ के बदले उस की **बख़्शिश व मग़्फ़िरत** फ़रमा देता है। (تفسیر در منثور، 7/40)

﴾11﴿ **ह़ज़रते** सफ़्वान बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मशाइख़े किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم फ़रमाते हैं कि जब आप क़रीबुल मर्ग शख़्स के पास सूरए यासीन की तिलावत करेंगे तो उस से **मौत की सख़्ती** को हलका किया जाएगा। (تفسیر در منثور، 7/39)

﴾12﴿ **ह़ज़रते** अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने शबे जुमुआ़ सूरए यासीन की तिलावत की उस की **मग़्फ़िरत** कर दी जाएगी।

(الترغیب والترہیب، 1/298، حدیث:4)

﴾13﴿ **ह़ज़रते** आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ुरआने ह़कीम में एक सूरत है जिसे **अल्लाह** पाक के हां "**अ़ज़ीम**" कहा जाता है, उस के पढ़ने वाले को **अल्लाह** पाक के हां "**शरीफ़**" कहा जाता है, उस को पढ़ने वाला क़ियामत के रोज़ रबीआ़ और मुज़िर क़बाइल से ज़ाइद अफ़्राद की **शफ़ाअ़त** करेगा, वोह सूरए यासीन है। (تفسیر در منثور، 7/40)

﴾14﴿ **शैख़ुल** ह़दीस मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने "जन्नती ज़ेवर" सफ़ह़ा 594 पर सूरए यासीन पढ़ने की बहुत सी बरकतें शुमार की हैं :

(1) भूका आदमी इस को पढ़े तो **आसूदा** (Satiate) किया जाए। (2) प्यासा पढ़े तो **सैराब किया** जाए। (3) मर्द बे औ़रत वाला पढ़े तो जल्द उस की **शादी** हो जाए। (4) औ़रत बे शौहर वाली पढ़े तो जल्द **शादी** हो जाए। (5) बीमार पढ़े तो **शिफ़ा** पाए। (6) क़ैदी पढ़े तो **रिहा** हो जाए। (7) मुसाफ़िर पढ़े तो सफ़र में **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से **मदद** हो। (8) ग़मगीन पढ़े तो उस का **रन्जो ग़म** दूर हो जाए। (9) जिस की कोई चीज़ गुम हो गई हो वोह पढ़े तो जो खोया है वोह **मिल** जाए। सूरए यासीन की एक आयत ﴿سَلٰمٌ ۟ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿۵۸﴾﴾ को एक हज़ार चार सो उन्हत्तर बार पढ़ो, اِنْ شَآءَاللہ जिस मक़्सद से पढ़ोगे मुराद पूरी होगी, ख़्वाजा दैरबी लिखते हैं : येह मुजर्रब है। और ﴿سَلٰمٌ ۟ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿۵۸﴾﴾ को पांच जगह एक काग़ज़ पर लिख कर ता'वीज़ बांधो तो **ह़वादिसात** (Accidents) और चोर वग़ैरा से ह़िफ़ाज़त रहेगी, जो शख़्स सुब्ह़ को सूरए यासीन पढ़ेगा उस का पूरा दिन **अच्छा** गुज़रेगा और जो शख़्स रात में इस को पढ़ेगा उस की पूरी रात **अच्छी** गुज़रेगी। ह़दीस शरीफ़ में है कि यासीन क़ुरआन का दिल है।

(जन्नती ज़ेवर, स. 594,595)

"दुआ" के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से सूरए दुख़ान के 3 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी रात में सूरए दुख़ान पढ़ेगा तो सुब्ह़ होने तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये **दुआए मग़्फ़िरत** करते रहेंगे। (ترمذی،4/406،حدیث:2897)

﴾2﴿ नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने शबे जुमुआ़ में **सूरए दुख़ान** पढ़ी उस की **मग़्फ़िरत** कर दी जाएगी। (ترمذی،4/407،حدیث:2898)

﴾3﴿ **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो जुमुआ के दिन या रात में सूरए दुख़ान पढ़ेगा **अल्लाह** पाक जन्नत में उस के लिये एक घर बनाएगा। (معجم کبیر، 8/264، حدیث:8026)

"फ़त्ह" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से सूरए फ़त्ह के 3 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ **हुदैबिया** से वापसी में मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरह के रास्ते में इस सूरत का नुज़ूल हुवा। जब येह सूरत नाज़िल हुई तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आज रात मुझ पर एक ऐसी सूरत नाज़िल हुई जो मुझे दुन्या की हर चीज़ से ज़ियादा **प्यारी** है।

(بخاری، 3/328، حدیث:4833 ملتقطا)

﴾2﴿ जिस वक़्त रमज़ान शरीफ़ का चांद देखा जाए तो सूरए फ़त्ह को तीन बार पढ़ने से तमाम साल रिज़्क़ में **फ़राख़ी** (Affluence) होती है। (जन्नती ज़ेवर, स. 596) कश्ती में सुवार होते वक़्त पढ़ने से **ग़र्क़** होने से मामून रहता है। जिदाल और क़िताल के वक़्त लिख कर पास रखने से **हिफ़ाज़त** होती है।

﴾3﴿ दुश्मनों पर **फ़त्ह** पाने के लिये इस को 21 मर्तबा पढ़िये अगर रमज़ान का चांद देख कर उस के सामने पढ़ा जाए तो اِنْ شَآءَ اللّٰه साल भर **अम्न** रहेगा। (जन्नती ज़ेवर, स. 596)

"रहमान" के चार हुरूफ़ की निस्बत से सूरए रहमान के 4 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ **हज़रते** अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि मैं ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना कि "हर चीज़ के लिये **ज़ीनत**

है और कुरआने पाक की ज़ीनत **सूरए रह़मान** है।" (تفسیر در منثور، 690/7)

﴾2﴿ सरकारे दो जहां صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वाला शान है : **सूरए ह़दीद**, اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ और अर्रह़मान के पढ़ने वाले को ज़मीन व आस्मान के फ़िरिश्तों में **साकिनुल फ़िरदौस** (या'नी जन्नतुल फ़िरदौस का रहने वाला) पुकारा जाता है। (تفسیر در منثور، 690/7)

﴾3﴿ ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि रसूले अकरम, रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم के पास तशरीफ़ लाए और **सूरए रह़मान** इब्तिदा से आख़िर तक तिलावत फ़रमाई, लेकिन सब ख़ामोश रहे। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं तुम पर येह कैसा सुकूत देख रहा हूं, मैं ने येही सूरत जिन्नों की मुलाक़ात की रात उन पर तिलावत की तो उन्हों ने तुम से इन्तिहाई ख़ूब सूरत और ह़सीन जवाब दिया, मैं जब इस आयत पर पहुंचा : فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۳﴾ तो उन्हों ने कहा : وَلَا بِشَیْءٍ مِّنْ نِعَمِكَ رَبَّنَا نُكَذِّبُ فَلَكَ الْحَمْدُ या'नी ऐ हमारे रब ! हम तेरी ने'मतों में से किसी भी शै को नहीं झुटलाते, सब ता'रीफ़ें तेरे लिये हैं।

(ترمذی، 190/5، حدیث:3302-تفسیر در منثور، 690/7)

﴾4﴿ सूरए रह़मान ग्यारह बार पढ़ने से **मक़ासिद** पूरे होते हैं, नीज़ इस सूरह को लिख कर और धो कर तुह़ाल (या'नी तिल्ली की बीमारी Spleen Disease) के मरीज़ को पिलाना बहुत **मुफ़ीद** है। (जन्नती ज़ेवर, स. 597)

सूरए वाक़िआ़ के फ़ज़ाइल

﴾1﴿ येह सूरत बहुत ही बा बरकत है **ह़ज़रते** अनस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सूरए वाक़िआ़ **तवंगरी** (या'नी ख़ुशह़ाली) की सूरत है लिहाज़ा इसे पढ़ो और अपनी औलाद को सिखाओ। (روح المعانی، 183/27)

﴾2﴿ **ह़ज़रते** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मरजुल मौत (Incurable Disease) में मुब्तला थे ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ उन की इ़यादत के लिये तशरीफ़ ले गए और उन से फ़रमाने लगे कि अगर मैं तुम्हें ख़ज़ाने से कुछ अ़त़ा कर दूं तो कैसा है ? उन्हों ने फ़रमाया : मुझे इस की कोई ज़रूरत नहीं। ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : बा'द में आप की बच्चियों के काम आएगा। इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : आप मेरी बच्चियों के मुतअ़ल्लिक़ फ़क़्रो फ़ाक़ा से डरते हो मैं ने इन को हुक्म दिया है कि वोह हर रात सूरए वाक़िआ़ पढ़ा करें, मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना कि जो आदमी हर रात सूरए वाक़िआ़ पढ़ेगा वोह कभी **फक़्रो फ़ाक़ा** में मुब्तला नहीं होगा। (تاریخ مدینۃ دمشق، 33/187، ملتقطا)

"मदनी इन्आ़म" के नव ह़ुरूफ़ की निस्बत से सूरए मुल्क के 9 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ **ह़ज़रते** अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि दो जहां के सरदार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक क़ुरआन में तीस आयतों पर मुश्तमिल एक सूरत है जो अपने क़ारी के लिये **शफ़ाअ़त** करती रहेगी यहां तक कि उस की **मग़्फ़िरत** कर दी जाएगी और येह تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ है।" (ترمذی، 4/408، حدیث:2900)

﴾2﴿ **ह़ज़रते** अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि रसूलों के सरदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ुरआने करीम में एक सूरत है जो अपने क़ारी के बारे में झगड़ा करेगी यहां तक कि उसे जन्नत में दाख़िल करा देगी और वोह येही **सूरए मुल्क** है। (معجم اوسط، 2/401، حدیث:3654 ملتقطا)

﴾3﴿ **ह़ज़रते** अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि "जब बन्दा क़ब्र में जाएगा तो अ़ज़ाब उस के क़दमों की जानिब से आएगा तो उस के क़दम कहेंगे तेरे लिये मेरी त़रफ़ से कोई रास्ता नहीं क्यूं कि येह रात में **सूरए मुल्क** पढ़ा करता था, फिर अ़ज़ाब उस के सीने या पेट की त़रफ़ से आएगा तो वोह कहेगा कि तुम्हारे लिये मेरी जानिब से कोई **रास्ता** नहीं क्यूं कि येह रात में **सूरए मुल्क** पढ़ा करता था, फिर वोह उस के सर की त़रफ़ से आएगा तो सर कहेगा कि तुम्हारे लिये मेरी त़रफ़ से कोई **रास्ता** नही क्यूं कि येह रात में **सूरए मुल्क** पढ़ा करता था।" तो येह सूरत रोकने वाली है, अ़ज़ाबे क़ब्र से रोकती है, तौरात में इस का नाम **सूरए मुल्क** है जो इसे रात में पढ़ता है वोह बहुत ज़ियादा और अच्छा अ़मल करता है।"

(مستدرک،3/322،حدیث:3892)

﴾4﴿ **ह़ज़रते** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने एक क़ब्र पर अपना ख़ैमा लगाया मगर उन्हें इ़ल्म न था कि यहां क़ब्र है अचानक उन्हें पता चला कि येह एक क़ब्र है जिस में एक आदमी **सूरए मुल्क** पढ़ रहा है यहां तक कि उस ने पूरी सूरत ख़त्म की वोह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ (जब) नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए तो अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह !** मैं ने अन्जाने में एक क़ब्र पर ख़ैमा लगा लिया अचानक मुझे मा'लूम हुवा कि येह एक क़ब्र है और उस में एक आदमी सूरए मुल्क पढ़ रहा है यहां तक कि उस ने सूरत मुकम्मल कर ली।" ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह सूरत अ़ज़ाबे कब्र को रोकने वाली और उस से नजात देने वाली है। (ترمذی،4/407،حدیث:2899)

﴾5﴿ **हुज़ूरे** अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : मेरी **ख़्वाहिश** है कि تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ हर मोमिन के दिल में हो।

(مستدرک،2/273،حدیث:2120)

﴾6﴿ चांद देख कर इस को पढ़ा जाए तो महीने के तीस दिनों तक वोह पढ़ने वाला सख़्तियों से اِنْ شَآءَاللّٰه महफ़ूज़ रहेगा, इस लिये कि येह तीस आयतें हैं और तीस दिन के लिये **काफ़ी** हैं। (تفسیر روح المعانی،6/29)

﴾7﴿ **हज़रते** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि प्यारे प्यारे आक़ा, صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक मैं क़ुरआन में **30** आयात की एक सूरत पाता हूं, जो शख़्स सोते वक़्त इस (सूरत) की तिलावत करे, उस के लिये **30 नेकियां** लिखी जाएंगी, और उस के **30 गुनाह** मिटाए जाएंगे, और उस के **30 दरजात** बुलन्द किये जाएंगे, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त अपने फ़िरिश्तों में से एक फ़िरिश्ता उस की त़रफ़ भेजेगा, ताकि वोह उस पर अपने पर **बिछा** दे और उस की हर चीज़ से जागने तक **हिफ़ाज़त** करे, और येह **मुजादला** (या'नी झगड़ा) करने वाली है, अपने पढ़ने वाले की मग़्फ़िरत के लिये क़ब्र में **झगड़ा** करेगी, और येह تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ है।

(تفسیر در منثور،8/233)

﴾8﴿ रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रात को आराम फ़रमाने से पहले सूरतुल मुल्क और الٓمّٓ تنزیل،السجدۃ **तिलावत** फ़रमाते थे। (تفسیر روح البیان،10/98)

﴾9﴿ **हज़रते** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने एक आदमी से फ़रमाया : क्या मैं तुझे एक ह़दीस **तोह़फ़े** के त़ौर पर न दूं जिस के साथ तू ख़ुश हो जाए, उस ने अ़र्ज़ की बेशक ! तो आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : येह सूरह पढ़ो : تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ और येह सूरत अपने अहलो इ़याल, अपने तमाम औलाद, अपने घर के बच्चों और अपने पड़ोसियों को सिखाओ (उन्हें इस

की ता'लीम दो) क्यूं कि येह **नजात** दिलाने वाली है और क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वाले के लिये अपने रब के पास **झगड़ने** वाली है, और येह उसे तलाश करेगी ताकि उसे जहन्नम के अ़ज़ाब से **नजात** दिलाए और इस की बरकत से इस का पढ़ने वाला अ़ज़ाब से भी **नजात** पा जाएगा।

(تفسیر در منثور، 8/231)

रमज़ान में गुनाह करने वाले की क़ब्र का भयानक मन्ज़र

(अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

एक बार अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ज़ियारते क़ुबूर के लिये कूफ़ा के क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए। वहां एक ताज़ा क़ब्र पर नज़र पड़ी। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को उस के ह़ालात मा'लूम करने की ख़्वाहिश हुई। चुनान्चे बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "**या अल्लाह !** इस मय्यित के ह़ालात मुझ पर मुन्कशिफ़ (या'नी ज़ाहिर) फ़रमा।" **अल्लाह** की बारगाह में आप की इल्तिजा फ़ौरन मस्मूअ़ हुई (या'नी सुनी गई) और देखते ही देखते आप के और उस मुर्दे के दरमियान जितने पर्दे ह़ाइल थे तमाम उठा दिये गए। अब एक क़ब्र का भयानक मन्ज़र आप के सामने था! क्या देखते हैं कि मुर्दा आग की लपेट में है और रो रो कर आप से इस त़रह़ फ़रियाद कर रहा है : "یَا عَلِیُّ! اَنَا غَرِیْقٌ فِی النَّارِ وَحَرِیْقٌ فِی النَّارِ" या'नी **या अ़ली !** मैं आग में डूबा हुवा हूं और आग में जल रहा हूं। क़ब्र के दहशत नाक मन्ज़र और मुर्दे की दर्दनाक पुकार ने ह़ैदरे कर्रार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को बे क़रार कर दिया। आप ने अपने रह़मत वाले परवर्दगार के दरबार में हाथ उठा दिये और निहायत ही

आ़जिज़ी के साथ उस मय्यित की बख़्शिश के लिये दरख़्वास्त पेश की। ग़ैब से आवाज़ आई : "ऐ अ़ली ! आप इस की सिफ़ारिश न ही फ़रमाएं क्यूं कि रोज़े रखने के बा वुजूद येह शख़्स रमज़ानुल मुबारक की बे हुर्मती करता, रमज़ानुल मुबारक में भी गुनाहों से बाज़ न आता था। दिन को रोज़े तो रख लेता मगर रातों को गुनाहों में मुब्तला रहता था।" मौलाए काएनात अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ येह सुन कर और भी रन्जीदा हो गए और सज्दे में गिर कर रो रो कर अ़र्ज़ करने लगे : **ऐ अल्लाह** पाक ! मेरी लाज तेरे हाथ में है, इस बन्दे ने बड़ी उम्मीद के साथ मुझे पुकारा है, मेरे मालिक ! तू मुझे इस के आगे रुस्वा न फ़रमा, इस की बे बसी पर रह़्म फ़रमा दे और इस बेचारे को बख़्श दे। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रो रो कर मुनाजात कर रहे थे। **अल्लाह** पाक की रह़मत का दरिया जोश में आ गया और निदा आई : "ऐ अ़ली ! हम ने तुम्हारी शिकस्ता दिली के सबब इसे बख़्श दिया।" चुनान्चे उस मुर्दे पर से अ़ज़ाब उठा लिया गया।

(انیس الواعظین ص۲۵)

क्यूं न मुश्किल कुशा कहूं तुम को तुम ने बिगड़ी मेरी बनाई है

जो लोग रोज़ा रखने के बा वुजूद गुनाह की सूरतों पर मुश्तमिल ताश, शत़रन्ज, लुड्डो, मोबाइल, आईपेड वग़ैरहा पर वीडियो गेम्ज़, फ़िल्में, ड्रामे, गाने बाजे, दाढ़ी मुंडाना या एक मुठ्ठी से घटाना, बिला उ़ज़्रे शर्ई जमाअ़त तर्क कर देना बल्कि مَعَاذَ اللّٰہ नमाज़ क़ज़ा कर देना, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी, वा'दा ख़िलाफ़ी, गाली गलोच, बिला इजाज़ते शर्ई मुसल्मान की ईज़ा रसानी, शर्अ़न ह़क़दार न होने के बा वुजूद गदागरी (या'नी भीक मांगना), मां बाप की ना फ़रमानी, सूद व रिश्वत का लेनदेन, कारोबार में धोका देना वग़ैरा वग़ैरा बुराइयों से **रमज़ानुल मुबारक** में भी

बाज़ नहीं आते उन के लिये बयान की हुई हिकायत में इब्रत ही इब्रत है। रमज़ान शरीफ़ में गुनाहों से बाज़ न आने वाले मज़ीद दो अहादीसे मुबारका मुलाहज़ा फ़रमाएं और खुद को **अल्लाह** पाक की नाराज़ी से डराएं। **(1)** जिस ने **रमज़ानुल मुबारक** में कोई गुनाह किया तो **अल्लाह** पाक उस के एक साल के आ'माल बरबाद फ़रमा देगा। (معجم اوسط، 2/414، حدیث:3688 ملخصا) **(2)** मेरी उम्मत ज़लीलो रुस्वा न होगी जब तक वोह माहे रमज़ान का हक़ अदा करती रहेगी। अर्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! रमज़ान के हक़ को ज़ाएअ़ करने में उन का ज़लीलो रुस्वा होना क्या है ? फ़रमाया : "इस माह में उन का हराम कामों का करना।" फिर फ़रमाया : "जिस ने इस माह में ज़िना किया या शराब पी तो अगले रमज़ान तक **अल्लाह** पाक और जितने आस्मानी फ़िरिश्ते हैं सब उस पर ला'नत करते हैं। पस अगर येह शख़्स अगले माहे रमज़ान को पाने से पहले ही मर गया तो उस के पास कोई ऐसी नेकी न होगी जो उसे जहन्नम की आग से बचा सके। पस तुम माहे रमज़ान के मुआमले में डरो क्यूं कि जिस तरह इस माह में और महीनों के मुक़ाबले में नेकियां बढ़ा दी जाती हैं इसी तरह गुनाहों का भी मुआमला है।" (معجم صغیر، 1/248)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लरज़ उठिये ! **माहे रमज़ान** की ना क़द्री से बचने का खुसूसिय्यत के साथ सामान कीजिये। **अल्लाह** पाक की रह़मत से मायूसी भी नहीं, रह़मत के दरवाज़े खुले हैं। गिड़गिड़ा कर तौबा कर के गुनाहों से बाज़ आ जाइये, नेक और सुन्नतों का पाबन्द बनने के लिये **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत और सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत

अगर आप किसी को समझाना चाहते हैं तो हकीमाना अन्दाज़ अपनाइये कि इस्लाह फ़क़त इसी तरह हो सकती है वरना जारिहाना अन्दाज़ ज़िद पैदा करता है।

(15 रजबुल मुरज्जब 1442 हि., 27 फ़रवरी 2021)

978-969-722-182-8
01082187

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
+92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net